গির্নার শিলালেখ

B.A. (H), SEM-4, CC08, SEC-C

সম্রাট অশোকের চতুর্দশ মুখ্য শিলানুশাসনের মধ্যে প্রথম হল গির্নার শিলালেখ।

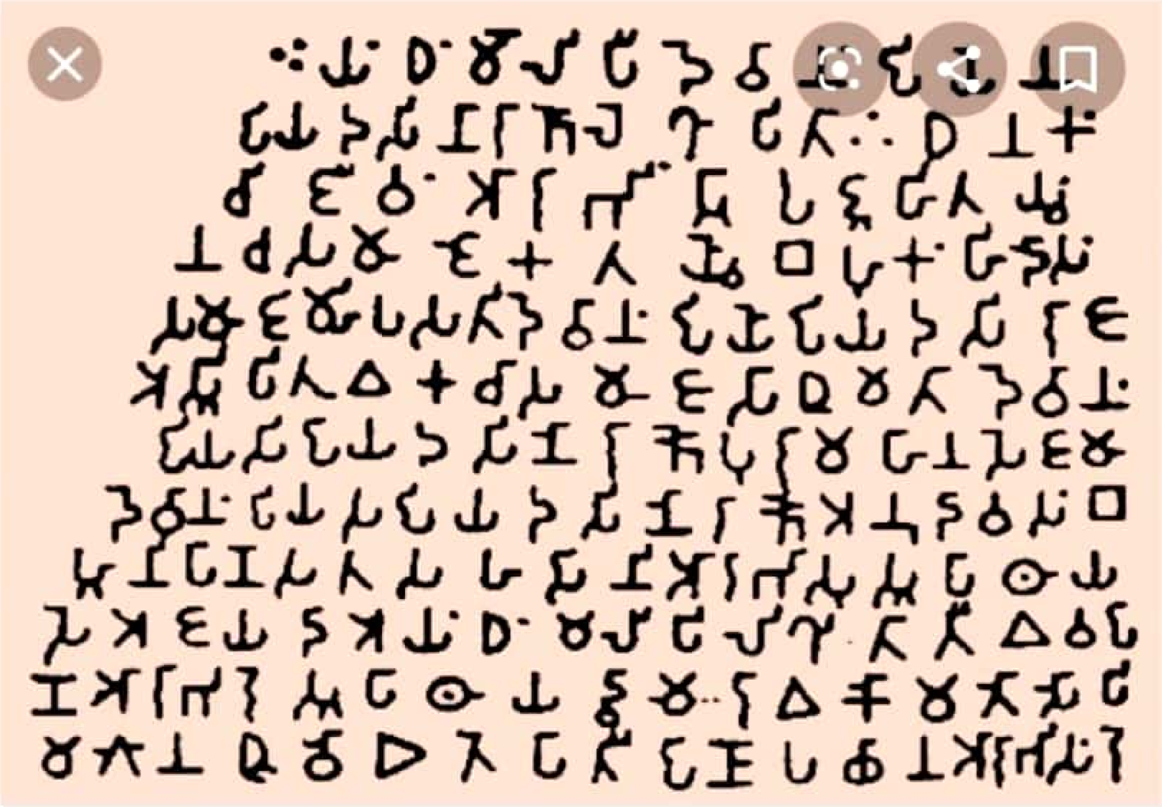

- প্রাপ্তিস্থান : গুজরাতের জুনাগড় নগর থেকে দুই কি.মি. পূর্বে গির্নার পর্বতের একটি বড় কাল গ্রানাইট শিলার পূর্বোত্তর ভাগে এই অভিলেক খোদিত।
- লিপি : আদি ব্রাহ্মী(খ্রী.পূ.৩য় শতক)
- ভাষা : প্রাচ্য প্রাকৃত
- কাল : ২৫৭-২৫৬ খ্রী.পূ অব্দ।

- পাঠোদ্ধার কর্তা : ১৮২২ সালে জেমস টড সাহেব এই অভিলেখ সকলের নজরে আনেন। ১৮৩৭ সালে জেমস প্রিন্সেপ এর কাছে পাঠানো হয়। জেমস প্রিন্সেপ এর পাঠোদ্ধার করেন।

পাঠোদ্ধারপদ্ধতি নিম্নে প্রদত্ত হল।

Scanned with CamScanner

GIRNAR ROCK EDICT

1. क	𑀇	𑀬𑀁	𑀥𑀁	𑀫	𑀮𑀺	𑀧𑀻	𑀤𑁂	𑀯𑀸	𑀦𑀁	𑀧𑁆𑀭𑀺	𑀬𑁂	𑀦				
ख	इ	यं	धं	म-	लि	पी	दे	वा	नं	प्रि	ये	न				
2. क	𑀧𑁆𑀭𑀺	𑀬	𑀤	𑀲𑀺	𑀦𑀸	𑀭𑀸	𑀜𑀸	𑀮𑁂	𑀔𑀸	𑀧𑀺	𑀢𑀸	𑀇	𑀥	𑀦	𑀓𑀺	
ख	प्रि	य	द	सि	ना	रा	ञा	ले	खा	पि	ता।	इ	ध	न	कि	
3. क	𑀘𑀺	𑀚𑀻	𑀯𑀁	𑀆	𑀭	𑀪𑀺	𑀢𑁆𑀧𑀸	𑀧𑁆𑀭	𑀚𑀽	𑀳𑀺	𑀢	𑀯𑁆𑀬𑀁				
ख	चि	जी	वं	आ	र	भि	त्पा	प्र	जू	हि	त	व्यं।				
4 क	𑀦	𑀘	𑀲	𑀫𑀸	𑀚𑁄	𑀓	𑀢	𑀯𑁆𑀬𑁄	𑀩	𑀳𑀼	𑀓𑀁	𑀳𑀺	𑀤𑁄	𑀲𑀁		
ख	न	च	स	मा	जो	क	त	व्यो।	ब	हु	कं	हि	दो	सं		
5 क	𑀲	𑀫𑀸	𑀚	𑀫𑁆𑀳𑀺	𑀧	𑀲	𑀢𑀺	𑀤𑁂	𑀯𑀸	𑀦𑀁	𑀧𑁆𑀭𑀺	𑀬𑁄	𑀧𑁆𑀭𑀺	𑀬		
ख	स	मा	ज	म्हि	प	स	ति	दे	वा	नं	प्रि	यो	प्रि	य		
क	𑀤	𑀲𑀺	𑀭𑀸	𑀚𑀸												
ख	द	सि	रा	जा।												
6. क	𑀅	𑀲𑁆𑀢𑀺	𑀧𑀺	𑀢𑀼	𑀏	𑀓	𑀘𑀸	𑀲	𑀫𑀸	𑀚𑀸	𑀲𑀸	𑀥𑀼	𑀫	𑀢𑀸		
ख	अ	स्ति	पि	तु	ए	क	चा	स	मा	जा	सा	धु	म	ता		
क	𑀤𑁂	𑀯𑀸	𑀦𑀁													
	दे	वा	नं													
7. क	𑀧𑁆𑀭𑀺	𑀬	𑀲	𑀧𑁆𑀭𑀺	𑀬	𑀤	𑀲𑀺	𑀦𑁄	𑀭𑀸	𑀜𑁄	𑀧𑀼	𑀭𑀸	𑀫	𑀳𑀸		
ख	प्रि	य	स	प्रि	य	द	सि	नो	रा	ञो।	पु	रा	म	हा		
	𑀦	𑀲	𑀏	𑀫												
	न	स														
8 क	𑀤𑁂	𑀯𑀸	𑀦𑀁	𑀧𑁆𑀭𑀺	𑀬	𑀲	𑀧𑁆𑀭𑀺	𑀬	𑀤	𑀲𑀺	𑀦𑁄	𑀭𑀸	𑀜𑁄	𑀅		
	दे	वा	नं	प्रि	य	स	प्रि	य	द	सि	नो	रा	ञो	अ		
क	𑀦𑀼	𑀤𑀺	𑀯	𑀲𑀁	𑀩											
	नु	दि	व	सं	ब											
9. क	𑀳𑀽	𑀦𑀺	𑀧𑁆𑀭𑀸	𑀡	𑀲	𑀢	𑀲	𑀳	𑀲𑁆𑀭𑀸	𑀦𑀺	𑀆	𑀭	𑀪𑀺	𑀲𑀼		
ख	हू	नि	प्रा	ण	स	त	स	ह	स्रा	नि	आ	र	भि	सु		
क	𑀧𑀸	𑀣𑀸	𑀬													
ख	पा	था	य													

Scanned with CamScanner

মূলবিষয়: অভিলেখে বলা হয়েছে এই ধর্মলিপিটি দেবপ্রিয় প্রিয়দর্শী রাজা অশোকের দ্বারা লেখানো হল(১-২)। অভিলেখে অশোক জানাচ্ছেন যে, তার রাজধানী পাটলিপুত্রে এবং তার সমগ্র রাজ্যে কোন জীবহত্যা করা যাবে না এবং যজ্ঞে উত্‌সর্গ করা যাবে না(৩)। যেহেতু সমাজ বহু দোষের উদ্ভব ঘটায় তাই রাজ্যে সমাজ(মেলা, উত্‌সব ইত্যাদি আপাতরমণীয় বিষয়) নিষিদ্ধ করা হয়েছে (৪)। তবে কিছু সমাজকে প্রিয়দর্শী রাজা উচিত বলে মানতেন (৫-৭) ।রাজবাড়ির রান্নাঘরে প্রতিদিন সহস্র পশু হত্যা করা হত(৮-৯)। কিন্তু আজ, যখন ধর্মলিপি লেখা হয়েছে, তখন মাত্র তিনটি প্রাণী- দুটি ময়ূর ও একটি মৃগ রান্নার জন্য বধ হয়েছে(১০-১১)। এদের মধ্যে মৃগহত্যা নিশ্চিত নয়। কিছুদিন পর এই তিন প্রাণীও বধ করা হবে না(১২)।

Scanned with CamScanner